A-PDF Image To PDF Demo. Purchase from www.A-PDF.com to remove the watermark

बालक-बालिकाओं के लिए

उत्तमोत्तम पुस्तकें

बाल-कवितावली

[ले०—ठाकुर श्रीनाथ सिंह]

इस पुस्तक में शिशुओं के पढ़ने योग्य ११२ शिक्षाप्रद और मनोरञ्जक कविताएँ हैं। यह पुस्तक भी ऐसी है कि बच्चे इसको पाकर नहीं छोड़ते। बड़े प्रेम से बार बार पढ़ते हैं। यहाँ तक कि पढ़ते पढ़ते इसकी कविताओं को रट डालते हैं। बालकों के लिये हिन्दी में अभी तक कोई भी पुस्तक ऐसी नहीं है। मूल्य केवल एक रुपया। 'शिशु' के ग्राहकों से बारह आना।

परियों का देश

[ले०—श्रीमती गोपाल देवी]

इस पुस्तक में परियों की २८ मनोरञ्जक कहानियाँ हैं। एक बार हाथ में लेकर बालक फिर इसे बिना ख़तम किये नहीं छोड़ते। बालकों में पढ़ने का शौक पैदा करने के लिए यह अपूर्व पुस्तक है। मूल्य एक रुपया। 'शिशु' के ग्राहकों से बारह आना। मँगाने का पता—

मैनेजर, 'शिशु' इलाहाबाद।

August 1926

SATH

P. O. Registered No. A 1175.

...म वर्ष] फ़रवरी १९२५ [द्वितीय अ...

...t the

...urage-

...पिक मूल्य २)]

सम्पादक—

पण्डित सुदर्शनाचार्य्य, बी० ए०

सहायक सम्पादक—श्रीनाथ सिंह

सुन्नी—"अभी काट खाएगा तो फिर
रो रो कर घर पाटेगा ।"
मुन्नू—"मगर तुझे तो नहीं काटना

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान । हृदय धरो माता का ध्यान ॥
तुम हीं पर आशा है सारी । मुख निरखे भारत-महतारी ॥

दशम वर्ष } प्रयाग, फरवरी १९२५ { द्वितीय अङ्क

बाल-विनय

हे भगवान ! हे भगवान !!
हम हैं बालक और अजान ।
करें तुम्हारा क्या गुणगान ?
मांगें तुमसे क्या बरदान ?
नहीं जानते कुछ भी नाथ !
केवल तुम्हें झुकाते माथ ॥
खड़े हुए हैं जोड़े हाथ ।
आओ, क्षण भर खेलो साथ ॥

—'श्रीश' ।

था उसी ओर लौटा। कुछ देर में कुन्ती को अपना घर दिखाई पड़ा। उसकी माँ घबड़ाई हुई दरवाज़े पर खड़ी थी।

बंशी वाले ने लड़कियों की माँ को देख कर कहा—"बहू जी! ये दोनों बीबियाँ रास्ता भूल गई थीं।"

माता ने बंशी वाले को भोजन कराया, उसके कुत्ते को भी रोटी का एक टुकड़ा दिया और दोनों लड़कियों के तथा अपने आँसू पूंछे। फिर माँ बोली—"तुम दोनो बड़ी चालाक हो फिर भी उस बंशी वाले की कहानी आज सच हो गई। हाँ, इसका अन्त सुखदाई हुआ।"

—गोपालदेवी।

बसन्त

बसन्त आया बसन्त आया।
बन बागों की महकी काया॥
लाल-लाल पत्तियाँ निराली।
निकल लगीं फैलाने लाली॥१॥

देखो जहाँ फूल ही छाये।
टेसू खिले आम बौराये॥
जामुन, नीम आदि सब फूले।
सब पर भौंरे झपटे झूले॥२॥

सरसों फूली पीली पीली।
अलसी फूली नीली नीली॥
उड़ने तितली लगी रँगीली।
खेतों की है छटा छबीली॥३॥

मधु मक्खियाँ लगीं मँडराने।
फूलों से फूलों पर जाने॥
कू! कू! बोली कोयल काली।
सचमुच है बसन्त बनमाली॥४॥

—कुसुमकुमारी देवी 'कली'।

February 1925

लालची चूहा

"क्या खाते हो मुझको भी दो।"
"क्या बकते हो चुप हो! चुप हो!"
ऐसी करते बातें दोनों।
अपनी करते घातें दोनों॥

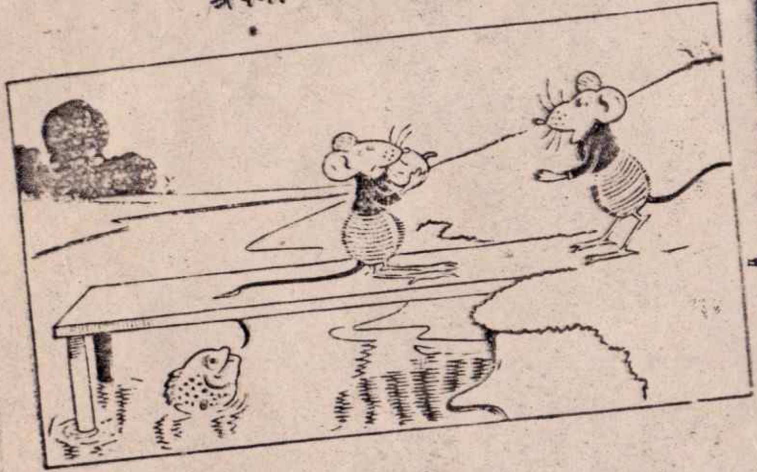

एक नदी के तट पर आये।
दोनों चूहे धाये धाये॥
एक खड़ी थी चौकी सुन्दर।
एक खड़ी थी चौकी सुन्दर।
कुछ बाहर कुछ जल के अन्दर॥

उसपर पहला चूहा आया।
जिसने पड़ा सेव था पाया॥
खुश हो वहीं लगा वह खाने।
और दूसरे को ललचाने॥
उस तख्ते में एक छेद था।
जिसका चूहे को न भेद था॥
उसमें से उसकी दुम झूली।
झूली दुम पर मछली उछली॥

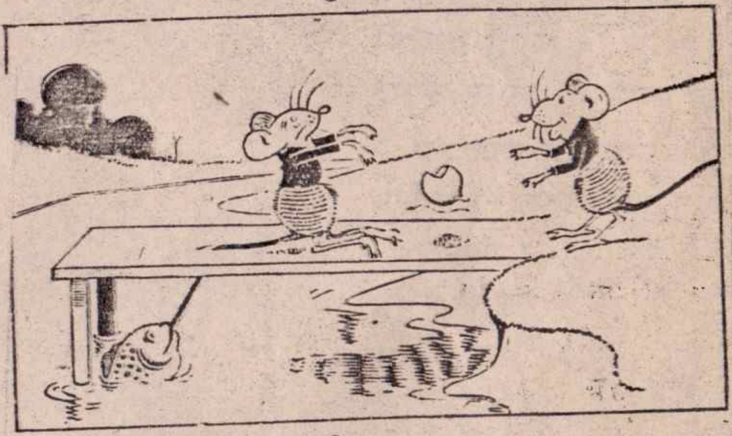

और खींचने लगी अचानक।
दशा हुई अब बड़ी भयानक॥
चूँ! चूँ! कर वह चूहा रोया।
हाथ सेब से फौरन धोया॥

February 1925

पर खिंचती ही रही अरे दुम ।
जो लख सकते हो बच्चो तुम ॥

उधर दूसरे चूहे ने आ ।
लिया भूमि से सेव झट उठा ॥

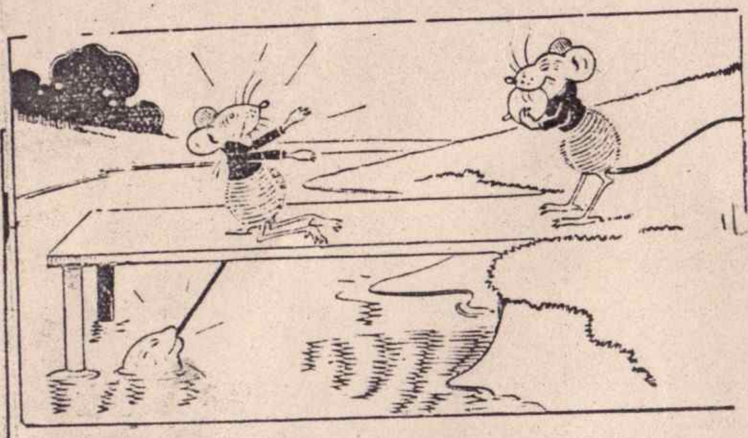

और लगा खाने खुश होकर ।
किन्तु रह गया पहला रोकर ॥

जो अटके अटके चिल्लाया ।
"लालच करने का फल पाया ॥"

—अरुण प्रकाश विशारद ।

ग्लिपटोडन

अमरीका के महाद्वीप में कहीं कहीं खुदाई होते हुए बड़ी बड़ी अद्भुत वस्तुएं निकली हैं। इन्हीं वस्तुओं में कुछ ऐसे जानवरों की ठठरियाँ भी पाई गई हैं जो अब से हजारों वर्ष पहले वहाँ रहते थे और अब सिवाय उनकी ठठरियों के और कहीं उनका नाम निशान भी नहीं मिलता। ऐसे ही जानवरों की ठठरियों में ग्लिपटोडन नामक जानवर की ठठरी भी पाई गई है।

यह जानवर देखने में कछुए से बहुत कुछ मिलता जुलता है। इसकी तस्वीर देखो तो ऐसा मालूम होगा कि इसका सारा बदन एक बड़े मज़बूत कामदार कवच से ढका हुआ है। यह कवच हड्डी का होता था। केवल सिर सामने की ओर से निकला है और पैर नीचे निकले हुए हैं। सिर और पूंछ भी हड्डी के बने एक प्रकार के कवच से ढके हुए थे। इसके पैर के अंगूठे छोटे छोटे और बड़े मोटे थे जिनसे पता चलता है कि इसको अपने खाने की तलाश में ज़मीन नहीं खोदनी पड़ती होगी। इसके मुंह में

१६ बड़े बड़े दाँत होते थे। इसका भोजन माँस न था यह बनस्पति हीं खाया करता था, पर इसकी और आदतों का पता नहीं चलता। हाँ, यह कहा जा सकता है कि इसके दुश्मन बहुत कम होंगे। साँप, बन्दर और दूसरे जानवर इसकी कुछ भी

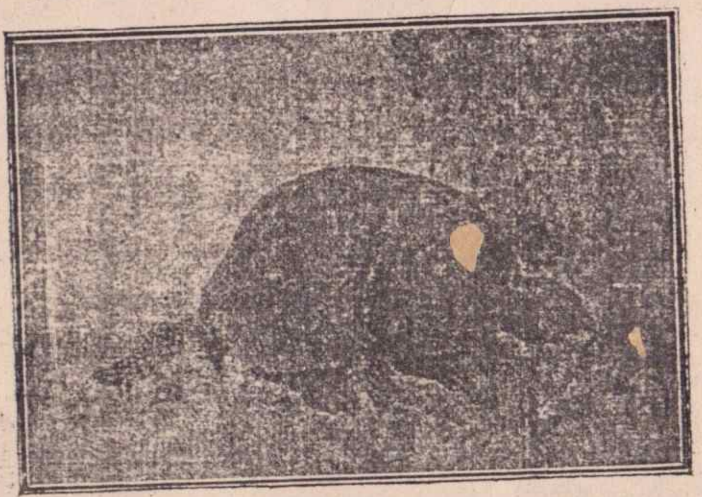

गिलपटोडन

हानि नहीं कर सकते थे। फिर भी पता नहीं चलता कि इसका अन्त क्यों हो गया? शायद आदमी ने ही शिकार करते करते इसका अन्त कर दिया हो?

—रामकिशोर सिंह।

फिरता फेरा
झुन झुन झुन झुन
घर आँगन की सैर करे॥
दे किलकारी
किलकिल किल किल
हा हा हू हू हरे हरे।
बोली प्यारी
खिल खिल खिल खिल
हँस हँस कर घर द्वार भरे॥

—विद्याभूषण 'विभु'।

हमारे नाखून क्यों होते हैं?

प्रकृति ने हमारे शरीर में कोई भी चीज़ ऐसी नहीं बनाई है जिससे हमें लाभ न हो। हाँ, यह हो सकता है कि कोई चीज हमारे ज्यादा काम की है और कोई कम काम की। हमें यह भी याद रखना चाहिए कि हमारे और दूसरे बड़े बड़े जानवरों के शरीर एक ही तरीके पर बने होते हैं। अब, तुम मान सकते हो

February 1925

कि तुम्हारी अंगुलियों के नाखून तुम्हारे किसी काम में नहीं आते परन्तु ये ही उन जानवरों को बड़ा काम देते हैं जिन्हें मिट्टी या रेत में गड्ढे खोदने पड़ते हैं। इन्हीं नाखूनों (जिन्हें हम पञ्जा कहते हैं) से अपने शत्रुओं से वे अपनी रक्षा भी करते हैं। शेर अपने पंजे ही से अपना शिकार पकड़ता है। बिल्ली के नाखून या पञ्जे ही उसे चूहे पकड़ा देते हैं।

यह तो हुई जानवरों की बात, पर इससे यह न समझना चाहिए कि हमारे नाखून हमारे किसी काम के नहीं हैं। ये हमें बड़ा काम देते हैं। ये हमारी अंगुलियों के सिरे को बड़ा सख्त बनाए रहते हैं। इसीसे अंगुलियाँ बड़ी आसानी से चीजें पकड़े रहती हैं। इन्हीं नाखूनों की मदद से ही हम सूई जैसी छोटी छोटी चीजें बड़ी आसानी से चुन लेते हैं। नाखून न हों तो अंगुलियों की दुर्दशा हो जाय।

—सूर्य्यनारायण त्रिपाठी।

——

मेरा आनन्द

होते प्रातःकाल नित्य मैं एक मील तक जाता हूँ।
दौड़ लगा कर शीश नवा कर दादा के ढिग आता हूँ।
एक इकन्नी ले कर उन से, उसका दूध मँगाता हूँ।
पी कर दूध हुआ मैं मोटा 'पहलवान' कहलाता हूँ॥
दिन में पढ़ता शाला जा कर संध्या को घर आता हूँ।
मुगदर सौ सौ बार फिरा कर रबड़ी पी, सो जाता हूँ।

—रामचरण लाल शास्त्री।

——

चलती फिरती गेंद

"मेरी गेंद अब नहीं उछलती", यह कहते हुए सत्तो ने फर्श पर गेंद पटक दी। गेंद जहाँ गिरी थी बिना हिले डुले वहीं रह गयी।

वह फिर बोली, "जब नानी ने मुझे यह गेंद दी थी तब यह बिलकुल नयी थी। देखने में बड़ी सुन्दर लगती थी। मुझे याद है पहले पहल मैंने जब इसे पटका तो यह उछल कर मेरी ठुड्डी में आ

लगी, जिससे मेरी जीभ दातों के नीचे पड़ कर कट गयी थी। तभी से मैंने एक सूजा लेकर इसमें छेद कर इसका उछलना बन्द कर दिया है। अब यह जमीन पर लुढ़कती भी नहीं है।"

सत्तो के छोटे भाई का नाम नन्हें था। वह पास ही बैठा कागज़ की नाव बना रहा था। सत्तो की बातें सुन उसकी ओर देखते हुए हँसा और बोला, "लाओ, मैं इसे ठीक कर दूँ, यह फिर आप से आप लुढ़कने लगेगी।

सत्तो ने कहा, "नहीं तू नहीं बना सकता।"

नन्हें ने उत्तर दिया, "अच्छा, ठहरो और देखो, मैं बनाता हूँ।"

सत्तो ने नन्हें को गेंद दे दी और कहा—"ले, बना दे।" इतने ही में माता ने सत्तो को पुकारा। सत्तो उसके पास चली गयी।

इधर नन्हें ने एक बड़ी तमाशे की बात की। उसने चाकू से गेंद का थोड़ा सा हिस्सा काट दिया। एक चूहे का बच्चा उसके अन्दर घुसा कर गेंद सी दी।

थोड़ी देर में सत्तो दौड़ती हुई आई। उसने देखा—गेंद जमीन पर आप से आप लुढ़क रही है। नन्हें अपनी जेब में हाथ डाले बैठा हुआ मुस्कुरा रहा है।

नन्हें बोला, "मैंने तुमसे कहा था न कि मैं गेंद को ठीक कर दूँगा। देखो, कैसी आप से आप चल रही है।"

सचमुच गेंद बड़ी अजब तरह से लुढ़क रही थी। एक बार इधर लुढ़की और फिर उधर गयी। एक जगह आध मिनट को रुक गयी। सत्तो उसे उठाने को झपटी, परन्तु वह फिर चलने लगी। एकाएक चूँ चूँ की आवाज भी सत्तो को सुनाई पड़ी। यह आवाज गेंद में से आती हुई मालूम पड़ी।

उसने बड़े विस्मय से नन्हें की ओर देखा। नन्हें खिलखिला कर हँस पड़ा। दौड़ कर गेंद उठा लाया और सत्तो के हाथ पर रख दी। गेंद फिर हाथ पर से लुढ़क फर्श पर गिर पड़ी, साथ ही चूँ चूँ की आवाज भी बड़े जोर से

निकली। और गेंद एक ओर को भागने लगी। सत्तो ने दौड़ कर गेंद फिर उठा ली। इस बार उसने गेंद को अच्छी तरह पकड़ रक्खा था। उसने देखा कि नन्हें ने गेंद को चाकू से काटा है और उसके अन्दर एक छोटी चुहिया घुसा दी है। वह चुहिया उसमें से निकलने की बड़ी कोशिश कर रही है। सत्तो को चुहिया पर बड़ा तरस आया। "तू बड़ा निर्दयी लड़का है," कहते हुए सत्तो ने गेंद के टाँके खोल चुहिया को बाहर निकाला। चुहिया घबरायी हुई कमरे के एक कोने की ओर भाग गयी।

— इन्दुमती देवी।

— —

बाल-लीला

(१)

हैं बस हिलती डुलती पुतली।
अभी बोलते बोली तुतली॥
पर ये दोनों आँखें प्यारी।
सदा माँगती दुनिया सारी॥

(२)

इनकी अजब अजीब कहानी।
चाहे पत्थर हो या पानी॥
रखते जग में सब से नाता।
कोई माता कोई भ्राता॥

(३)

कभी चोर बनते छिप जाते।
जू-जू बन कर कभी डराते॥
या कोयल बन कू-कू गाते।
तरह तरह के वेष बनाते॥

(४)

जो लखते उस पर ललचाते।
आजा, आजा, उसे बुलाते॥
आता अगर न तो झल्लाते।
बड़े बड़े आँसू टपकाते॥

(५)

"चिलिया मुझे बना दे माता।
बहुत मुझे है उड़ना आता॥"
कह कर यही लगें जब रोने।
आँसू से सब गाल भिगोने॥

(६)

तब बैठाल दिया डाली पर।
माँ ने झूठे पङ्ख लगा कर॥

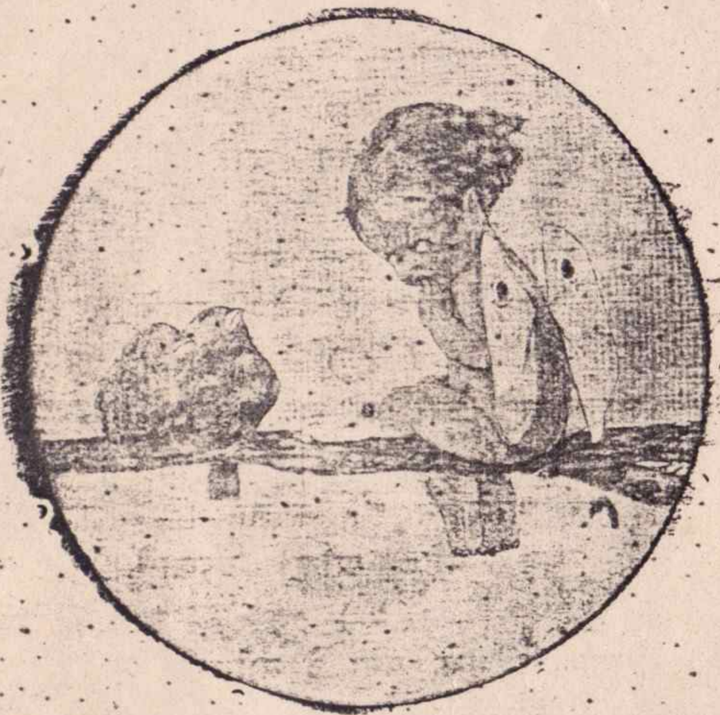

बच्चो चित्र लखो यह सुन्दर।
बैठ रहे हैं चिड़िया बन कर॥

(७)

अभी बहुत थे हँसते गाते।
पर अब हैं चुप होते जाते॥
लो फिर शुरू कर दिया रोना।
नहीं चाहते चिड़िया होना॥

(८)

जिसको इतना रोकर पाते।
छिन में भूल उसी को जाते॥
किसी और हित मुँह कर गीला।
बड़ी निराली इनकी लीला॥

—श्रीनाथ सिंह।

अनोखी बातें

१—अद्भुत मछली

दक्षिण अमेरिका के ब्रेजील प्रदेश में पैरेना नाम की एक नदी है। इस नदी में ऐसी मछलियाँ पायीं जाती हैं जो कुत्ते की तरह भौंकती हैं।

२—२६,००० वर्ष

सूर्य की किरणों को तो सूर्य्य से पृथिवी तक